Saint Fateh Singh Convent School, Maur Mandi

Hindustani Music Vocal (Code - 034)

Class - XII

Impotents Questions

Maximum Marks - 30

प्रश्न- 1:- अलंकार किसे कहते है? अलंकार का महत्व बताते हुए2 उदाहरण लिखिए।

उत्तर1 : - नियमानुसार स्वरों की चलन को अलंकार कहते है। अलंकार का अर्थ है 'आभूषण' जिस प्रकार आभुषण हमारे शारीरिक सोंद्रय को बढ़ाते है उसी प्रकार अलंकार गायन - वादन की सुंदरता को बढ़ाते है अलंकारों में स्वरों का एक नियमित क्रम होता है। अलंकार में आरोह - अवरोह दोनों होते है जो स्वरों का क्रम आरोह में होता है ठीक उसी का उल्टा क्रम अलंकार के अवरोह में होता है।

जैसे : -

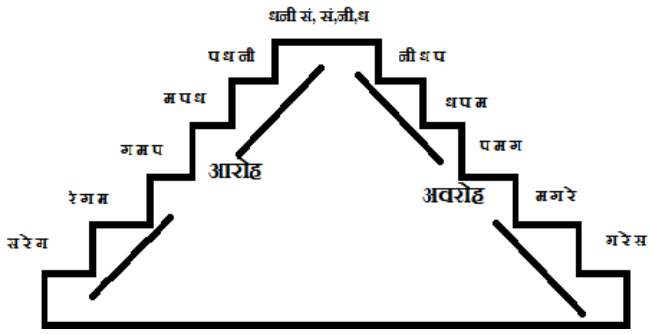

1. आरोह : - स रे ग, रे ग म, ग म प , म प ध, प ध नी, ध नी सं
   अवरोह : - सं नी ध, नी ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे स
2. आरोह : - स ग, रे म, ग प , म ध, प नी, ध सं
   अवरोह : - सं ध, नी प, ध म, प ग, म रे, ग स

अलंकार को शुद्ध कोमल व् तीव्र सभी स्वरों का प्रयोग किया जा सकता है। परन्तु अलंकारों की रचना के समय यह ध्यान रखना चाहिए की राग की अलंकार बनाये जा रहे है उसी राग के स्वरों का स से तार सप्तक के सं तक होता है।

<u>अलंकारों का महत्व</u>

रागों की सुंदरता को बढ़ाने के साथ-साथ अलंकार रागों के विस्तार में भी सहायता प्रदान करते है।

इसका महत्व इस प्रकार है : -

1. स्वर ज्ञान में बढ़ोतरी होती है।
2. वादन की उंगलिया उसके साज में सध जाती है।
3. गायक के गायन में अद्भुत रस आ जाता है।
4. तानों की तयारी में सहायता मिलती है|
5. संगीत की रचनात्मक प्रवृति को बल मिलता है।

प्रश्न- 2:- <u>वर्ण (Varna) संगीत के आधार पर परिभाषित करे|</u>

उत्तर : - स्वर विभिन्न कर्म अर्थात चल को वर्ण कहते है । साधारण रूप से स्वरों की चलन चार प्रकार से अर्थात वर्ण चार प्रकार के होते है ।

"गायन की किर्या का स्वरों के पद आदि से विस्तार करना वर्ण कहलाता है"

स्वरों के प्रयोग से गायन वादन के समय आवाज को जो चल मिलती है, वर्ण कहलाती है।

वर्ण चार प्रकार के होते है

www.sfscs.com

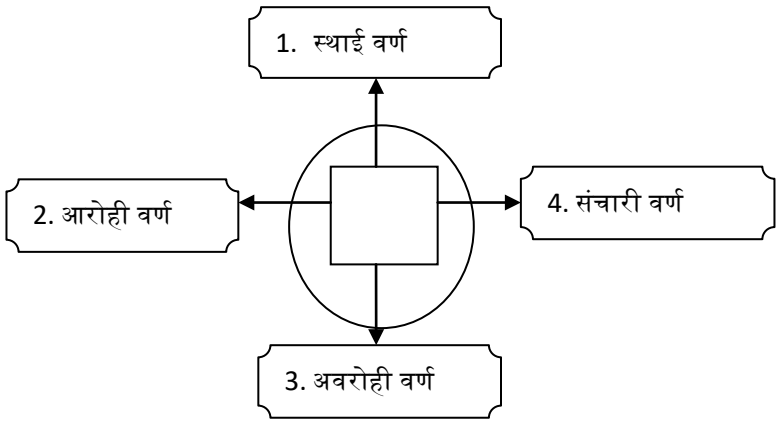

1. <u>स्थाई वर्ण : -</u> जब कोई स्वर एक से अधिक बार उच्चारित किया जाता है तो उसे स्थाई वर्ण कहते है |
   जैसे - रे रे, ग ग ग , म म आदि ।
2. <u>आरोही वर्ण : -</u> स्वरों के चढ़ते हुए कर्म को आरोही वर्ण कहते है |
   जैसे स रे ग म ।
3. <u>अवरोही वर्ण : -</u> स्वरों के उतरते हुए कर्म को अवरोही वर्ण कहते है |
   जैसे- नि ध प म ग रे स ।
4. <u>संचारी वर्ण : -</u> स्थाई वर्ण, आरोही वर्ण, अवरोही वर्ण के मिश्रित रूप को संचारी वर्ण कहते है। इसमें कभी तो कोई स्वर ऊपर चढ़ जाता है तो कभी कोई स्वर बार-बार दोहराया जाता है। दूसरे शब्द में संचारी वर्ण में तीनो वर्ण दिखाई देते है।
   जैसे : - स स स रे ग म प ध प म प म ग रे स |

प्रश्न- 3:- कण स्वर क्या होता है या कण स्वर को परिभाषित करे।

उत्तर : - गायन या वादन करते समय मूल स्वर के साथ जिस अन्य स्वर को स्पर्श किया जाता है वह कण स्वर कहलाता है। कण स्वर से मूल स्वर की दुरी जितनी ज्यादा होगी उतना ही उसे लगाना कठिन हो जायेगा। उदाहरण की लिए सं स्वर पर जाते हुए नि का कण कहेगे । मूल स्वर के ऊपर कण स्वर को लिखा जाता है। यदि मूल स्वर ध है और उस पर 'प' का कण लगाना है तो उसे इस प्रकार लिखेंगे ध प।

प्रश्न- 4:- मींड किसे कहते है?

उत्तर : - किन्ही दो स्वरों को इस प्रकार गाने-बजाने को मींड कहते है जिनके बीच में कोई रिक्त स्थान न रहे। साधारण रूप माय अटूट ध्वनि में एक स्वर से दूसरे स्वर तक जाने को मींड कहते है। मींड लेते समय बीच के स्वरों का इस प्रकार स्पर्श होता है कि वे अलग अलग सुनाई नहीं पड़ते। जैसे स से म तक मींड लेते समय बीच के स्वरों का स्पर्श होता है , किन्तु वे अलग - अलग सुनाई नहीं पड़ते । मींड निकालने के लिए स्वरों के ऊपर उल्टा अर्थ -चंद्राकर बनाते है जैसे - स म । मींड भारतीय संगीत की विशेषता है। इससे गाने - बजाने में लोच और रंजकता आती है ।

प्रश्न- 5:- खटका और मुर्की को परिभाषित करें ।

उत्तर : - **<u>खटका</u> : -** चार या चार से अधिक स्वरों की एक गोलाई बनाते हुए स्वरों के दर्त प्रयोग को खटका कहते है, जैसे रेसानिसा, सरेनिसा अथवा निसारेसा । जिस स्वर पर खटका देना होता है, उसे कोष्टक स्वर से अथवा आगे-पीछे के स्वर से दत्त गति में गोलाई बनाते है और उसी स्वर पर समापत करते है, जिसको कोष्टक से बंद किया जाता है।

<u>मुर्की</u> : - मुर्की भी एक प्रकार की गामक है। इसमें तीन स्वरों की अर्थ गोलाई बनाई जाती है। जैसे रे निस । इसको लिखते समय मूल स्वर के बाई तरफ अन्य दो स्वरों का कण लिखा जाता है।अत : मुर्की को एक प्रकार का कण भी कहा जाता है। धम प

www.sfscs.com

प्रश्न- 6:- गमक से आपका क्या अभिप्राय है

उत्तर: - गम्भीरतापूर्वक स्वरों के उच्चारण को गमक कहते है। गायन में गामक निकालने के लिए ह्रदय पर जोर लगाते है। स्वरों के ऐसे कंपन को गमक कहते है जो सुनने वालों के चित्त को सुखदाई हो। गमक मुख्य रूप से 15 माने गए है। जैसे कंपित , आंदोलित, स्फुरित, लीन इत्यादि। आधुनिक समय में न तो गमक को प्राचीन अर्थ में और न गमक के प्राचीन प्रकारो कि नाम प्रयोग किये जाते है बल्कि केजीएम है। 5 प्रकारों में से खटका, मुर्की, मींड आदि के नाम से प्रयोग किये जाते है।

प्रश्न- 7:- ग्राम से क्या भाव है? इसके कितने प्रकार है?

उत्तर: - प्राचीन काल में निश्चित श्रुति अन्तरो के अनुसार शब्द का साधारण अर्थ गावं है। जिस प्रकार व्यक्ति से परिवार और परिवार से गावं बनता है उसी प्रकार श्रुति से स्वर और स्वरों से ग्राम बनता है, ग्राम के तीन प्रकार माने गए है: -

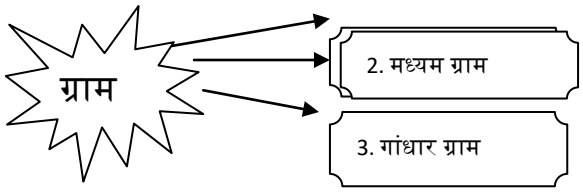

1. षड्ज ग्राम : - षड्ज ग्राम स स्वर से प्राम्भ होता था। इसका मुख्य स्वर भी सा ही था। षड्ज ग्राम में सातों स्वर इन् श्रुतियों पर आते थे : -

स	रे	ग	म	प	ध	नी
4	7	9	13	17	20	22

2. मध्यम ग्राम : - मध्यम ग्राम म स्वर से प्रारम्भ होता था मध्यम ग्राम के स्थापना के अनुसार सात स्वर इन् श्रुतियों पर आते थे: -

स	रे	ग	म	प	ध	नी
4	7	9	13	17	20	22

3. गांधार ग्राम: - गांधार ग्राम का लोप प्राचीन काल से ही होने लगा था। इस ग्राम की व्याख्या शास्त्रों में नहीं मिलती। कुछ लोगों का विचार है कि प्राचीन काल में निवाद ग्राम प्रचलित था जिसे गन्धर्व लोग गाया करते थे। आधुनिक समय में इस ग्राम का प्रचार बिलकुल नहीं है। प्राचीन मत अनुसार इस ग्राम को निषाद स्वर से प्रारम्भ किया जाता था।

22 श्रुतियों पर तीनो ग्रामो की स्थापना

श्रुति संख्या	षड्ज ग्राम	मध्यम ग्राम	गांधार ग्राम
1			in
2			
3			
4	s	s	s
5			
6			
7	ry	ry	ry
8			
9	g	g	
10			g
11			
12			
13	m	m	m
14			
15			
16		p	p
17	p		

www.sfscs.com

18			
19			D
20	D	D	
21			
22	in	in	

प्रश्न- 8:- mucC~nw की परिभाषा दे।

उत्तर : - mucC~nw सब्द ' मुच्छी' धातु से बना है जिसका अर्थ है, चमकना अथवा उभरना। mucC~nw का तातपर्य उस स्वरावली से है जिसको सुनकर सभी मोहित हो जाते है। स्वरों का आरोह - अवरोह करने से mucC~nw की स्थापना होती है। mucC~nw की उत्तपति ग्राम से मानी जाती है। प्रत्येक ग्राम से mucC~nwE> 21 हुई। ग्रामों के शेष स्वरों से ही आरोह - अवरोह करने से mucC~nw की रचना होती है। एक ग्राम में 7 स्वर होते है।

1. mucC~nw में स्वर क्रमानुसार होते है।
2. ग्रामों में स्वरों का आरोह - अवरोह किया जाता है तब बनती है।
3. mucC~nw सम्पूर्ण होती है भाव इसमें स्वरों की संख्या सात होती है।

प्रश्न- 9:- आलाप से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : - राग के स्वरों को विलमिबत लय में विस्तार करने को आलाप कहते है। राग का स्वरूप स्पष्ट करने के लिए उसके स्वरों को सजाकर धीमी लय में उसका आलाप करते है। आलाप द्वारा गमक अथवा वादक राग के विशेष स्वर के साथ राग का स्वरूप श्रोताओ के सम्मुख प्रस्तुत करता है और अपनी हृदगत भावनाओ को राग के स्वरों द्वारा दूसरे तक पहुंचाता है। आलाप भाव - प्रधान होते है। गीत के दो प्रकार होते है : -

1. एक गीत गाने के पूर्व तालरहित होता है जिसे गायक नाम- तोम अथवा आकार में गाता है।
2. दूसरा गीत के साथ तालबद्ध होता है जिसे गायक आकार में अथवा गीत के बोलो के साथ गाता है।

प्रश्न- 10:- तान को परिभाषित करें?

उत्तर: - तान शब्द का अर्थ तानना अथवा विस्तार करना है। राग में लगने वाले स्वरों का विस्तार जल्द या द्रुत लय में करना तान कहलाती है। यदि आलापों को द्रुतलय में गाया अथवा बजाय जाये तो वे ही तान कहलाएगी। आलाप और तानों में लय का अन्तर है। तानों में लय का महत्व अधिक है। इसी लिए दुगुन , तिगुण , चौगुन , अठगुण, आदि लयों में ताने ही जाती है|तानों के मुख्य तीन प्रकार है: -

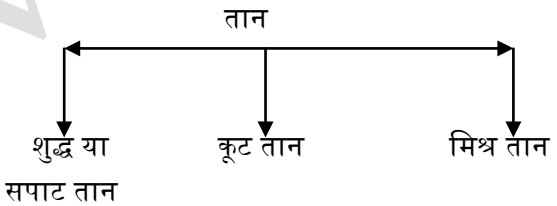

तानों के अन्य अनेक प्रकार भी होते है जो ख्याल गायन में ज़्यादातर सुनने में आते है जैसे जबड़े की तान , गामक की तान, वक्र तान, खटके की तान, इत्यादि।

प्रश्न- 11:- राग वर्गीकरण की कौन-कौन सी प्रणालियां है? इसका विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये

www.sscs.com

उत्तर:- वर्गीकरण एक प्राकृतिक नियम है| प्रकृति में स्थान-स्थान पर वर्गीकरण दिखाई पड़ता है संगीत में भी वर्गीकरण हुआ | रागों को विभिन्न तरीके से बांटने की परंपरा प्राचीन काल से आज तक चली आ रही है | वर्गीकरण के इतिहास को तीन कालों में बांटा जा सकता है:-

प्राचीन काल	मध्य काल
1.जाति वर्गीकरण	1. शुद्ध, छायालग और संकीर्ण
2.ग्राम राग वर्गीकरण	2. मेल राग वर्गीकरण
3. दस विधि राग वर्गीकरण	3. राग-रागीरनि वर्गीकरण
4. शुद्ध, छायालग और संकीर्ण वर्गीकरण	

<u>आधुनिक काल</u>

1. रागांग वर्गीकरण
2. थाट-राग वर्गीकरण
3. इन तीनों कालों में राग वर्गीकरण का विस्तार इस प्रकार है:-

<u>प्राचीन काल</u>

1.<u>जाति वर्गीकरण</u>:- प्राचीन काल में कुल 3 ग्राम षडज मध्यम और गंधार माने जाते थे | भरत कृत नाट्य शास्त्र में यह वर्णन है कि 2 ग्राम अर्थात षडज और मध्यम ग्रामों में 18 जातियां उत्पन्न हुई| 18 जातियों को शुद्ध और विकृत भागों में बांटा गया | इनमें 7 शुद्ध व् 11 विकृत मानी गई|

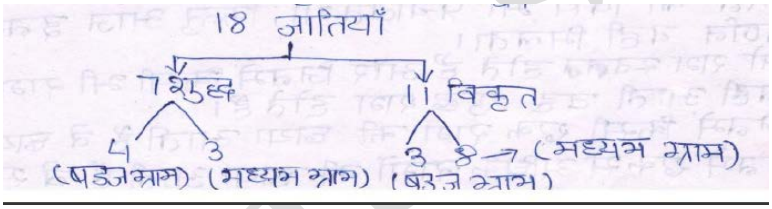

जाती और राग एक दूसरे के प्रायवाची शब्द कहे जा सकते है। जिस प्रकार आजकल राग - गायन प्रचलित है, उसी प्रकार प्राचीन काल में जाती - गायन प्रचलित था। स्वर और वर्ण युक्त सुंदर रचना को जाती कहते थे।

2. <u>ग्राम - राग वर्गीकरण : -</u> जाती वर्गीकरण के पश्चात ग्राम राग - वर्गीकरण का जन्म हुआ। प्राचीन काल में ग्राम - राग भी जाति अथवा राग के समान सुन्दर और गेय रचनाएँ होती थी। प्राचीन ग्रन्थों में 30 ग्राम राग मिलते है अर्तात 18 जातियों में कुल तीस ग्राम राग उत्पन्न माने गए। इन् ग्राम रागों के शुद्ध ,भिन्न, गौड़, बेसर तथा साधारण 5 गीतियों में बिभाजित किया गया।

शुद्ध	भिन्न	गौड़	बेसर	ग्राम राग (साधारण रीति)	
7 +	5 +	3 +	8 +	7	=30 ग्राम राग

3. <u>दस विधि राग वर्गीकरण : -</u> 13 वी शताब्दी में पं0
शारंगदेव द्वारा लिखित संगीत रत्नाकर में समस्त रागों को दस वर्गों में विभाजित किया गया

1.ग्राम राग	6.अनतभाषा
2.राग	7.रागांग
3.उपराग	8.भाषांग
4.भाषा	9.उपांग
5.विभाषा	10.क्रियांग

4. <u>शुद्ध, छायालग और सकीर्ण वर्गीकरण : -</u> प्राचीन काल में रागों को शुद्ध, छायालग और सकीर्ण वर्गों में विभाजित करने की विधि शुद्ध भी प्रचलित थी, किन्तु आज इनका स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता।जो राग स्वंतत्र होते है और जिनमे किसी भी राग की छाया नहीं

www.sts.com

आती वह शुद्ध राग होते है। जिनमे किसी एक राग की छाया आती है वे छायालग राग जिनमे एक से अधिक रागों की छाया आती है वे संकीर्ण राग।

मध्य काल

(1) मेल राग वर्गीकरण : - मेल को 'आधुनिक थाट' का पयार्यवाची कहा जा सकता है। जिस प्रकार से आधुनिक कwल में थाट -राग प्रचलित है उसी प्रकार मध्य काल में मेल राग प्रचलित था। कुछ ने 12, कुछ ने 19 और व्यंकटमुखी ने 72 मेल सिद्ध किये।

(2) राग- रागिनी वर्गीकरण : - मध्यकाल की यह विशेष्ता थी कि कुछ रागों को स्त्री और कुछ को पुरुष मानकर रागों कि वंश - परम्परा मानी गयी। इसी विचारधारा के आधार पर राग- रागिनी पद्धति का जन्म हुआ।

चारो मतों का विवरण इस प्रकार है : -

(i) शिव अथवा सोमेश्वर मत : - इस मतानुसार छ : राग, प्रत्येक राग कि 6-6 रागिनियाँ और उसके बाद पुत्र - वधुएं भी मानी गयी

(ii) कृष्ण अथवा कल्लिनाथ मत : - इस मत के 6 राग प्रथम मत के ही सामान थे किन्तु उनकी 6 रागनियां उनके पुत्र और पुत्र - वधुएं शिव मत से भिन्न थी।

(iii) भरत मत : - इस मतानुसार 6 राग कि 5-5 रागIनियाँ 8-8 पुत्र और पुत्र - वधुएं मानी जाती थी।

(iv) हनुमान मत : - इसके 6 राग भरत मत के समान थे। प्रत्येक की 5-5 रागनियाँ और 8-8 पुत्र माने गए जो भरत से भिन्न थे।

आधुनिक काल

i. रागांग वर्गीकरण : - स्व० नारायण मोरेश्वर खरे ने 30 रंगागों के अंतग~q सभी रागों के विभाजित किया। रंगागों कि संख्या अधिक और वर्गीकरण कुछ जटिल होने के कारण यह प्रचार में नहीं आ स्का।

ii. थाट - राग वर्गीकरण : - मध्य काल में मेल राग वर्गीकरण प्रचलित था और यह थाट का प्रायवाची है अर्थात दोनों का अर्थ एक ही है। मध्यकालीन की ही यह वर्गीकरण थाट -राग वर्गीकरण के नाम से प्रचार में आई जिसका मुख्य श्रेय सव० भातखण्डे जी को है। उन्होंने समस्त रागों को दस थाटों में विभाजित किया।

प्राचीन काल से आज तक राग वर्गीकरण के जितने भी विभाजन हो चुके है उनमे से थाट - राग वर्गीकरण आधुनिक कल के लिए सर्वोत्तम है।

प्रश्न- 12:- रागों का समय किन सिंद्धातो पर निर्भर है। इसकी विस्तारपूर्वक चर्चा करे।

उत्तर : - भारतीय संगीत की यह प्रमुख विशेषता है की प्रतेयक राग के गाने -बजाने का एक निश्चित समय माना गया है। भारतीय संगीत में निम्नलिखित चार सिंद्धातों के आधार पर रागों का समय निश्चित किया गया है : -

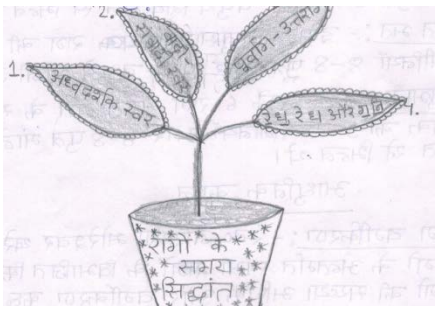

www.sfscs.com

(i) अध्वदर्शक स्वर : - उत्तर भारतीय संगीत में मध्यम स्वर को बड़ा महत्त्व प्राप्त है। किसी राग का गायन वादन दिन हो सकता है अथवा रात्रि , इस लिए मध्यम के अध्वदर्शक स्वर कहा गया है। 24 घंटे की समय को दो बराबर भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग को पूर्वाध जिसका समय 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि तक और दिव्तीय भाग को उत्तराधर जिसका समय 12 बजे रात्रि से 12 बजे दिन तक माना जाता है । पहले भाग की अवधि में अर्ताथ पूर्वाधर में तीव्र म और उत्तराधर में शुद्ध मध्यम की प्रधानता पायी जाती है|

(ii) वादी सवांदी स्वर : - जिस प्रकार दिन के दो भाग किये गए उसी प्रकार सप्तक के भी दो भाग किये गए है - पुवार्ग और उत्तरांग । संख्या की दृष्टि से सा रे , ग, म, पुवार्ग में और प , ध, नि, सं , उत्तरांग में आते है । सर्वपर्थम शास्त्रकारों ने यह नियम बनाया होगा कि जिन रागों का वादी स्वर स , रे, ग और म स्वरों में हो तो उनका गायन समय दिन के पहले हिस्से अर्ताथ 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि के भीतर और जिन रागों का वादी स्वर प , ध , नि और सं में से हो उनका गायन समय दिन के दूसरे हिस्से अतः 12 बजे रात्रि से 12 बजे दिन के भीतर होना चाहिए|

(iii) पूर्वाग - उत्तरांग : - जिस राग का पूर्वाग अधिक प्रधान होता है , वह 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि तक की अवधि में और जिस राग का उत्तर अंग अधिक प्रबल होता है , वह 12 बजे रात्रि से 12 दिन की अवधि में किसी समय गया - बजाया जाता है। इस सिद्धांत के भी कुछ राग अपवाद स्वरूप है , जैसे राग - हमीर। स्वरूप की दृष्टि से यह उत्तरांग प्रधान राग है , किन्तु दिन के पूर्व अंग में गाया जाता है।

(iv) रे ध कोमल , रे ध शुद्ध तथा ग नि कोमल वाले राग : -

(i) रे ध कोमल वाले अथवा सन्धिप्रकाश राग : - जिन रागों में रे ध स्वर कोमल लगते है वे सन्धिप्रकाश राग कहे गए है , क्यों की उनका गायन उस समय होता है जब दिन और रात्रि की संधि होती है । सन्धिप्रकाश का समय 4 बजे से 7 बजे तक , प्रात: काल तथा 4 से 7 बजे तक सायकल मन जाता है। इस काल की अवधि में पूर्वी , मारवा और भैरव थाट के सभी राग गाये जाते है ।

(ii) रे ध शुद्ध वाले राग : - इस वर्ग में बिलावल , खमाज , और कल्याण थाट के राग आते है। इस वर्ग के रागों में एक विशेषता यह पायी जाती है की इनमे सदैव शुद्ध गन्धार प्रयोग किया जाता है। इस वर्ग ky रागों का समय 7 से 10 तक सुबह तथा 7 से 10 तक रात्रि माना गया है ।

(iii) ग नि कोमल वाले राग : - दूसरे वर्ग के रागों के पश्चात ग नि कोमल वाले रागों का समय आता है। इनकी अवधि दिन और रात में 10 से 4 बजे तक है। कुछ विद्वान् 12 से 4 बजे तक मानते है , किन्तु प्रथम मत अधिक उपयुक्त है , अत: स्वर की दृष्टि से हम सभी रागों को तीन वर्गो में विभाजित कर सकते है

1. रे कोमल - ग शुद्ध वाले राग
2. रे - ग शुद्ध वाले राग
3. ग कोमल वाले राग

प्रश्न- 13:- संगीत के महत्पूर्ण ग्रंथो में से एक ग्रंथ संगीत पारिजात है। इस ग्रंथ के बारे में विस्तारपूर्वक अध्यन कीजिये ।

उत्तर : - संगीत पारिजात ग्रंथ पंडित अहोबल द्वारा सन 1650 ई० में लिखा गया है । इस ग्रंथ में 22 श्रुतियो : - को माना गया है और 7 शुद्ध स्वरों को उन् पर स्थापित किया है जो इस प्रकार है : -

श्रुतियाँ	1 2 3	4	5 6	7	8	9	10 11 12	13	14 15 16	17	18 19	20	21	22
स्वर		स		रे		ग		म				ध		नि

यानि स , म, प की चार - चार श्रुतियाँ ,
रे, ध, की तीन - तीन श्रुतियाँ ,
ग, नि की दो - दो श्रुतियाँ है ।

www.sfscs.com

वर्ण : - गायन की किर्या का स्वरों के पद आदि से विस्तार करना हे वर्ण है वर्ण चार प्रकार के होते है : -

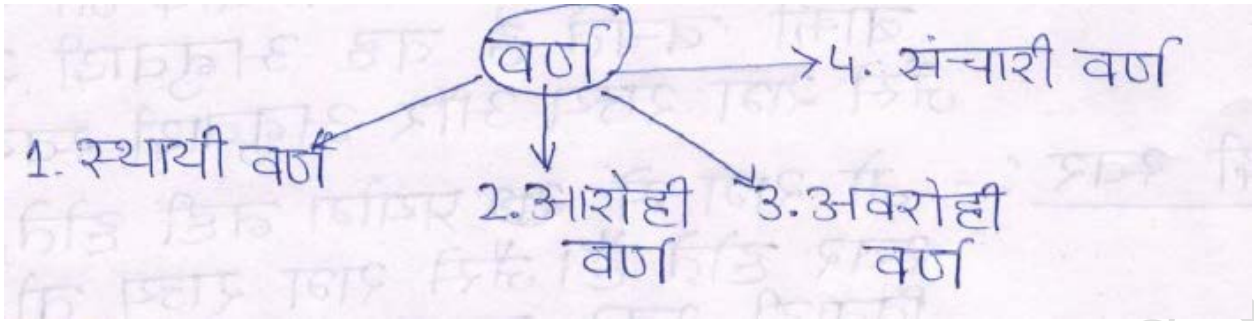

राग : - इस ग्रंथ में लगभग 122 रागों का वर्णन किया है। रागों को थाटों के अंतग्रत नहीं रखा गया परन्तु शुद्ध थाट आधुनिक काफी थाट के समान है |

मुच्छ~ना : - मुच्छ~ना के बारे में इस ग्रंथ में लिखा गया है की जब स्वरों का आरोह - अवरोह होता है तो उसे मुच्छ~ना कहते है जो ग्राम पर निर्भर करती है। एक ग्राम में 7 मुच्छ~नाएँ होती है। मुख्य दो ग्राम षड्ज और मध्यम ग्राम प्रचलित थे और दोनों ग्रामों में 14 मुच्छ~नाएँ बनती है।

ग्राम : - स्वरों का समूह ग्राम कहलाता है। ग्राम के तीन प्रकार है: -

(i) षड्ज (ii) मध्यम ग्राम (iii) गांधार ग्राम

वादी स्वर : - जो स्वर राग में सबसे अधिक प्रयोग होता है। उदाहरण राग एक राज्य और वादी स्वर उस राज्य का राजा

सवांदी स्वर : - वादी से कम परन्तु अन्य स्वरों से ज्यादा प्रयोग होता है। राग राज्य और सवांदी उसका वजीर।

अनुवादी स्वर : - वादी , संवादी स्वर के बाद जो स्वर बाकी बचते है वह अनुवादी स्वर है। जैसे राग राज्य और अनुवादी स्वर प्रजा।

विवादी स्वर : - जो राग में प्रयोग नहीं होते, विवादी स्वर होते है। जैसे राग राज्य तो विवादी स्वर उसका दुश्मन।

अलंकार : - किसी भी चीज़ को सजाने को अलंकार कहते है और जिनके द्वारा राग सजाये जाते है तान, पलटे, अलाप अलंकार कहलाते है।

प्रश्न- 14:- 13-वी शताब्दी में पंडित सारंगदेव ने कौन सा ग्रंथ लिखा उस ग्रंथ की विस्तृत चर्चा करे।

उत्तर : - संगीत रत्नाकर को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण संगीत ग्रंथ माना जाता है इस ग्रंथ की रचना 13 वी शताब्दी में पं० शारंगदेव जी ने की। पंडित जी ने अनेक संगीत ग्रंथो का अध्यन करके सभी संगीत संबधी सामग्री 'संगीत रत्नाकर' के अंतगर्त समाहित किया। इस ग्रंथ को प्राचीन संगीत के प्रमुख ग्रंथ के रूप में स्वीकारा गया है।

इस ग्रंथ को मुख्य रूप से सात अध्यायों में विभाजित किया है।

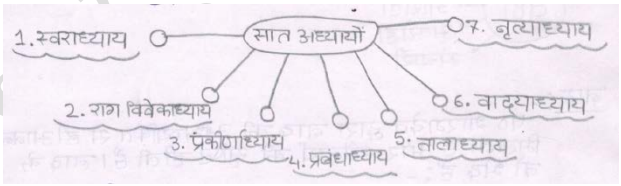

इन्होने भी भरत की तरह 18 जातियां स्वीकार की तथा 12 स्वर माने जाते है।

पंडित जी द्वारा संगीत के दो प्रकार माने है: -

1. मार्गी संगीत — इसका प्रयोग देवता लोग करते है — उदेश्य - मोक्ष प्राप्ति

2. देशी संगीत — जनरुचियो पर आदरित संगीत

अलंकार : - विशिस्ट स्वर समुदाय को अलंकार कहते है। संगीत रत्नाकर में चार प्रकार के अलंकार का वर्णन किया है: -

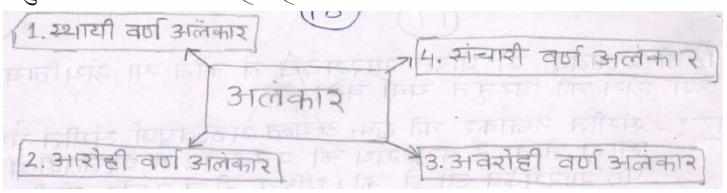

वर्ण : - गायन क्रिया का वर्ण कहते है। वर्ण के चार प्रकार होते है: -

वर्ण

स्थायी
आरोही
अवरोही
संचारी

नाद : - पं० शारंगदेव द्वारा नाद की अभिव्यक्ति से ही आनन्द मिलता है और सोंद्रय की सृष्टि होती है। नाद के दो भेद है: -

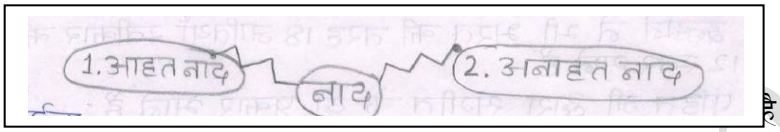

मुच्छ~ना : - सात स्वरों का क्रम से आरोह है। कुल 21 मुच्छनाएँ बनी

राग : - पंडित शारंगदेव जी ने राग को 10 वर्गो में विभाजित किया है: -

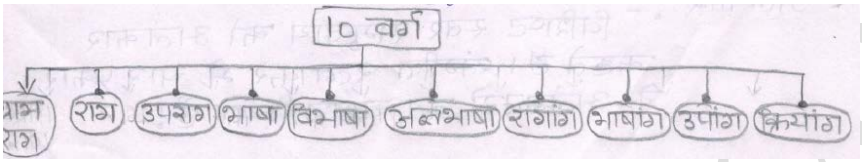

प्रश्न- 15:- अब्दुल क्रीम खां संगीत में क्या दें है चर्चा करें।

उत्तर : - संगीत जगत स्व० अब्दुल करीम खां का बहुत श्रेणी है। उन्होंने कोई चोटी के कलाकारों का निर्माण किया।

जन्म : - अब्दुल करीम खां का जन्म सहारनपुर के किराना गांव में हुआ। आपके पिता का नाम काले खां और चाचा का नाम अब्दुल खां था जो स्वयं संगीतज थे जिनसे आपको संगीत की सिक्षा मिली।

शिक्षा : - आपकी शिक्षा बचपन से ही शुरू हो गई थी और बालक करीम खां का गायन लोगो को हैरान कर देता था। छोटी सी उम्र में आप संगीत के जलसो में अपना कार्यक्रम देने लगे थे। फिर आपको बड़ोदा दरबार का राजगायक नियुक्त किया गया। तीन वर्षो तक बड़ौदा- नरेश की सेवा में रहने के बाद कुछ दिनों तक बंबई में रहे और तत्पश्चात मिरज चले गए।

संगीत शिक्षण : - संगीत शिक्षण पद्धति के लिए पूना में 1913 ई० के लगभग संगीत विधालय की स्थापना की जिसे आर्य संगीत विधालय का नाम दिया 1920 कुछ कारणों से विधालय बंद कर देना पड़ा। खां साहब ने कई उच्च श्रेणी के कला -कारों को तैयार किया जिनमे हीराबाई बड़ोदकर सरस्वती राने, बड़रे बुआ आदि प्रमुख है|

व्यक्तित्व एवं गायकी : - खां साहब की गायकी ग्वालियर घराने से सबंध रखती थी। शरीर से दुबले - पतले तथा स्वभाव से बहुत सहज और सरल थे। भजन तथा मराठी भावगीतों पर भी पूरा अधिकार था।

मृत्यु : - इस प्रकार पंडित जी संगीत की सेवा करते - करते 27 अक्तूबर 1917 को थोड़ी सी अस्वस्थता के बाद स्वर्गलोक सिधार गये।

फैयाज खां

जब कभी आगरा घराने की चर्चा उठती है तो स्व० 30 फैयाज खां का स्मरण बरबस हो आता है।

www.sfcs.com

जन्म : - उस्ताद फैयाज खां का जन्म सन 1886 में आगरा में सिकंदरा के निकट हुआ। उनके पिता का नाम सफदर हुसैन था । जन्म के 4 महीने बाद पिता की मृत्यु के बाद नाना ने हो पालन - पोषण किया ।

शिक्षा : - नाना ने ही पालन पोषण किया और 20 वर्षो तक आपको संगीत शिक्षा भी प्रदान की। आगरा घराने से संबधित फैयाज खां भी ख्याल व् ध्रुपद गायकी के श्रेष्ठ कलाकार बन गए।

संगीत के क्षेत्र में ख्याति : - मैसूर नरेश ने आपके गायब से प्रसन्न होकर आपको 1960 में एक स्वर्ण पदक व् 1917 ई० में 'आफ़ताब मौसिकी ' की उपाधि दी। बड़ौदा में दरबारी गायक के स्थान पर नियुक्ति मिली और ज्ञान रतन की उपाधि प्रदान की गई। 1936 में इलाहबाद विष्वविधालय में संगीत विषय पर प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ।

संगीत को देन : - आगरा घराना ध्रुपद व् धमार के लिए आपने अपनी गाई कई बंदिशों के साथ 'प्रेम पिया' उपनाम जोड़ा । अनेक रागों में आपके रिकार्ड भी बने जैसे जय-जयवंती , राग नट - बिहाग आदि ।

मृत्यु : - 5 नवंबर 1950 को आपका बड़ौदा में निधन हो गया।

www.sfscs.com